बी॰ए खण्ड - द्वितीय / हिन्दी (प्र०) / अध्ययन सामग्री

डॉ॰ संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक :- 09.04.2021

पत्र : चतुर्थ / छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

उड़ चल, हारिल काव्य की व्याख्या

उड़ चल, हारिल अज्ञेय की एक प्रसिद्ध रचना है, जो उनके काव्य संग्रह 'इत्यलम्' में संग्रहित है। इसका प्रकाशन 1946 ई॰ में हुआ। इसके माध्यम से कवि ~~अपनी~~ की दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय देते हुए कहते हैं -

उड़ चल, हारिल, लिये हाथ में
यही अकेला ओछा तिनका —
ऊषा जाग उठी प्राची में
कैसी बाट भरोसा किन का !
शक्ति रहे तेरे हाथों में —
छूट न जाय यह चाह सृजन की ;
शक्ति रहे तेरे हाथों में —
रुक न जाय यह गति जीवन की

(हारिल :- कबूतर जैसा दिखने वाला हरा रंग का चिड़ियाँ ~~जिसके~~ जो पैरों (पंजों) में (पैर पीला) हमेशा लकड़ी दबाए रहती है। यह महाराष्ट्र का ~~राज्य~~ राज्यपक्षी है। ~~यह~~ मरने के बाद भी यह अपने पंजो से उस लकड़ी के टुकड़े को नहीं छोड़ती है। यह एक सामाजिक पक्षी है जो हमेशा समूह में रहता है। हमेशा आकाश में उड़ता है। पीपल और बरगद के पेड़ के ऊपर टहनियों पर बैठता है। जमीन पर बहुत ही कम उतरती है।

ओछा :- छोटा, ऊषा :- प्रात : काल, प्राची = पूरब दिशा,
बाट :- रास्ता, भरोसा : आसरा, चाह = इच्छा,
सृजन : निर्माण)

~~कवि~~ कविता में हारिल पक्षी नवयुवकों का प्रतीक है जिसे अज्ञेय अपने कर्म पथ पर बढ़ते रहने की प्रेरणा देते हुए कहते हैं ——

हे नवयुवको ! तुम्हारे जीवन का ~~नव~~ प्रभात हो चुका है, तुम अपने कर्म पथ पर उस हारिल पक्षी की तरह बढ़ो। ~~और अपने पंखों में~~ तुम्हें ~~किसी का~~ किसी का भरोसा नहीं करना है

तुम्हें खुद पर भरोसा करना है। तुम खुद पर भरोसा कर आगे तो बढ़ो तुम्हें खुद रास्ता मिलता चला जाएगा। तुम उस हारिल पक्षी की तरह बनो जो एक छोटा-सा तिनका का सहारा लेकर पूरा आकाश विचरण करती है उसका वह तिनका ही आत्मविश्वास है। जो तुम्हारे पास है, पर्याप्त है उसी से जीवन पथ पर आगे बढ़ो। तुम हमेशा अपनी शक्ति पर भरोसा रखो कभी भी उस हारिल पक्षी की भांति सृजन (निर्माण) का चाह मत छोड़ना। हमेशा कुछ नया करने का प्रयास करते रहना। ~~कवि~~ वे कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार हारिल पक्षी मरने के बाद भी अपने ~~पैरों से~~ पंजों से उस तिनके को नहीं छोड़ता। उसी प्रकार तुम भी अपने कर्म-पथ पर कभी भी हार मत मानना। अर्थात् कवि चाहते हैं कि नवयुकों में सृजन की चाह हमेशा बनी रहे कभी वह खत्म न हो।